# 4

# मुगल साम्राज्य

**बच्चे आपस में अकबर–बीरबल से जुड़े लतीफों को एक दूसरे को सुनाकर मनोरंजन कर रहे थे। इन दोनों से जुड़ी मजेदार कहानियाँ आम प्रचलन में रही हैं इसलिए बच्चे इन दोनों नामों से परिचित थे। सहसा कुछ बच्चों के मन में इन दोनों के विषय में जिज्ञासा पैदा हुई क्योंकि अभी तक ये दोनों चरित्र बच्चों के लिए कहाँनियों के काल्पनिक पात्र ही थे।**

आपने इकाई तीन में सल्तनत काल के राजा (सुल्तान) और राजवंशों के बारे में पढ़ा है। इस काल का आखरी महत्वपूर्ण राजा फिरोजशाह तुगलक था जिसके मरने के साथ ही सल्तनत में बिखराव और कमजोरी आने लगी। राजा का नियंत्रण अपने शासन क्षेत्र पर से ढीला पड़ने लगा। इसी क्रम में तुर्क आक्रमणकारी तैमूर ने (1398–99) भारत पर आक्रमण कर दिल्ली सल्तनत की रही–सही प्रतिष्ठा भी समाप्त कर दी। इस आक्रमण के बाद अफगानों ने अवसर पाकर दिल्ली सल्तनत का शासन अपने हाथ में ले लिया। सल्तनत का आखरी राजवंश इन्हीं अफगानों में से एक समूह, लोदियों द्वारा स्थापित किया गया था। इसके समय में दिल्ली सल्तनत का नियंत्रण आगरा–दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों तक सीमित हो गया था। सल्तनत की इस कमजोरी का लाभ उठाकर कर भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में कई राज्य बन गए। इनमें गुजरात, बंगाल, जौनपुर, मालवा, दक्षिण भारत के राज्य और राजपूताना में मेवाड़ का राज्य प्रमुख था। ये सभी राज्य आपस में लड़ते रहते थे इनमें सबों की इच्छा दिल्ली पर अधिकार करने की थी, क्योंकि वह अभी भी राजनैतिक

इकाई 3 के तालिका 1 पर नजर डालिए एवं मानचित्र 4 को देखकर लोदियों के राज्य क्षेत्र को चिह्नित करें

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक था। वस्तुतः दिल्ली सल्तनत काल में लगभग 300 वर्षों तक राजधानी रही थी। यहाँ से भारतवर्ष के अधिकांश हिस्से पर शासन किया जाता था। इसलिए यह शहर एक तरह से भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर था।

बाबर

इन छोटे राज्यों में ही बिहार में नूहानी अफगानों का शासन था। इस राज्य के अधीन फरीद या शेर खाँ का सासाराम पर नियंत्रण था। वह अपनी योग्यता के बदौलत नूहानी राजाओं के काफी करीब आ गया था। धीरे–धीरे शेर खाँ ने बिहार में अपने को प्रभावी बनाया और आगे नुहानी शासकों के स्थान पर स्वयं बिहार का शासक बन गया। बिहार के इस बदलाव से पड़ोसी बंगाल के अफगान शासकों के साथ शेर खाँ की संघर्ष की स्थिति बन गई। बंगाल के शासक शेर खाँ के इस बढ़ते प्रभाव से चिंतित थे। 1538 ई० में दोनों के बीच युद्ध हुआ, इसमें शेर खाँ की जीत हुई। इसके साथ ही वह भारत का सबसे शक्तिशाली अफगान शासक बन गया।

लगभग इसी समय काबुल और कंधार के शासक बाबर के भारत पर आक्रमण हुए। बाबर स्वयं इस समय के हिन्दुस्तान के विषय में अपनी आत्मकथा में लिखता है कि जब उसने हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त की उस समय सारा हिन्दुस्तान किसी एक शासन के अधीन नही था. अर्थात् यहाँ अनेक छोटे–छोटे राजा राज्य करते थे और उनमें से प्रत्येक अपने को सम्राट समझता था। आपने निरंतर भारत पर होने वाले विदेशी आक्रमणकारियों के विषय में पढ़ा है। वस्तुतः भारत पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण हमेशा उत्तर–पश्चिम सीमा से होता आया था क्योंकि उस क्षेत्र को सुरक्षित रखने के लिए शासकों द्वारा कभी भी ध्यान नही दिया गया। बाबर भी उसी रास्ते से भारत आया। वह अपने छोटे राज्य को बढ़ाने और भारत की सम्पदा एवं धन–दौलत के विषय में सुनकर आया था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

**भारत में मुगल राज्य की नींव–** 1526 में बाबर अपनी घुड़सवार सेना, तोप (जिसका उपयोग भारत में नहीं हो रहा था) बंदूक **तथा घुड़सवार तीर अंदाज एंव आक्रमक युद्ध** शैली के साथ पानीपत पहुँचा। यहाँ दिल्ली के अफगान शासक इब्राहिम लोदी के साथ उसका संघर्ष हुआ। इसमें बाबर की जीत हुई। बाबर के सहयोगी, जीत के बाद धन लूट कर वापस लौटना चाहते थे. लेकिन उसने उन्हें समझाकर हिन्दुस्तान में रहने के लिए राजी कर लिया। इस जीत के बाद बाबर ने कई ताकतवर अफगान सरदारों और महत्वपूर्ण राजपूत राजाओं को एक–एक कर पराजित करते हुए अपने नए राज्य को भारत में स्थापित किया। इस क्रम में उसने 1527 में चित्तौड़ के शासन राणा सांगा, 1528 में चन्देरी के शासक मेदिनी राय और 1529 में पूर्वी भारत के अफगानों को पराजित किया।

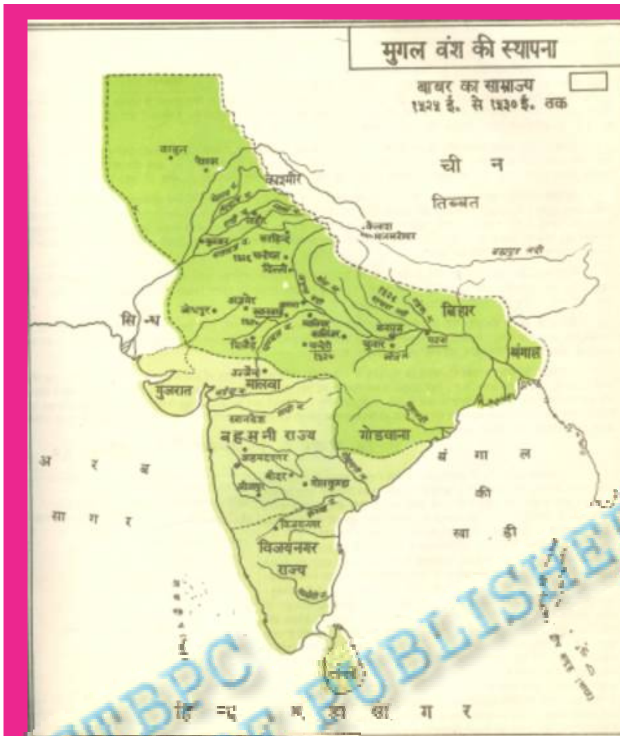


**मुगल कौन थे ?**
**exy tkfr ls rqdZ vkSj nks egku eS/; ,f'k;kbZ egRoiw.kZ jktoa'kksa ds o'kt FksA ekrk dh vksj ls exksy 'kkld pxst [kku ds mÙkjkf/kdkjh] firk dh vksj ls rSewj ds o'ktA yfdu os viuk dks rSewj ds ] o'kt gh dgk djrs Fks D;kfd mUgsa egku iwoZt rSewj ij xoZ Fkk] ftlus 1398 esa fnYyh ij vf/kdkj fd;k FkkA**


www.absol.in
© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

**शेर खाँ का मुगलों के साथ संबंध**—शेर खाँ कुछ दिनों तक बाबर के अधीन मुगलों की सेवा में भी रहा। वहाँ उसने मुगलों के कार्यकलापों को बारीकी से देखा, जिससे उसे निराशा हुई। उसने इसके बाद अपना पूरा ध्यान बिहार में अपने शासन को मजबूत बनाने पर दिया। उसने यहाँ अपने को मजबूत बनाते हुए मुगल बादशाह से सीधी लड़ाई के लिए तैयारी भी की।

> **vQxku vkSj exy la?k"kZ dk dkjd D;k jgk**

**हुमायूँ तथा मुगल–अफगान संघर्ष**— बाबर अपने राज्य को बिना व्यवस्थित किए 1530 में मर गया। उसका बड़ा लड़का हुमायूँ बादशाह बना। उसको शुरू से ही भारत में शासन कर रहे राजवंशों के शक्तिशाली विरोध का सामना करना पड़ा। सबसे प्रबल विरोध अफगानों की तरफ से हुआ क्योंकि अफगान उस समय भारत में सबसे शक्तिशाली थे। उनका शासन भारत के कई हिस्से में फैला हुआ था। अफगान विरोध का केन्द्र बिहार था।

यहाँ शेर खाँ की लगातार प्रगती को देखकर हुमायूँ ने सबसे पहले बंगाल को जिस पर शेर खाँ का अधिकार हो गया था, जीतने का प्रयास किया। इसमें उसे सफलता भी मिली। शेर खाँ ने हुमायूँ के बंगाल अभियान को नहीं रोका। मुगल बादशाह आठ महीनों तक वहाँ रहा। इस बीच शेर खाँ अपनी शक्ति को बढ़ाते हुए बिहार के अतिरिक्त चुनार, बनारस, जौनपुर, कन्नौज को अपने अधिकार में कर लिया। इस तरह उसने हुमायूँ के आगरा लौटने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। आगरा में हुमायूँ के भाइयों द्वारा राज्य प्राप्त करने के प्रयास के कारण उसे वापस लौटना पड़ा। इसी क्रम में चौसा और कन्नौज नामक स्थानों पर हुमायूँ और शेर खाँ के बीच लड़ाइयाँ हुईं । इसमें शेर खाँ सफल रहा और इस प्रकार उसने भारत में एक बार फिर अफगान राज्य को स्थापित किया। मुगल अफगान संघर्ष के इस दौर में अफगानों की जीत का पूरा श्रेय शेर खाँ के सफल कूटनीति को जाता है।

**शेरशाह**

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

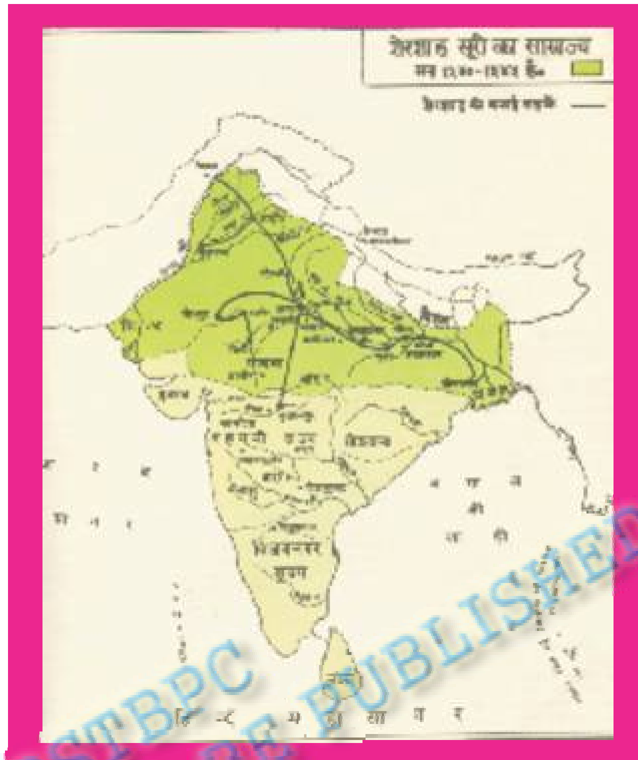


**शेरशाह का शासन—** शेर खाँ ने राजा बनने के बाद शेरशाह की उपाधि धारण की, उसने अपने पूरे राज्य में कानून और व्यवस्था स्थापित की। क्योंकि मुगल और अफगान संघर्ष के कारण भारत का एक बड़ा क्षेत्र प्रशासनिक रूप से अस्थिर हो गया था। उसने स्थानीय जमींदारों से वसूल की गई लगान को भी सख्ती से प्राप्त किया। जमींदारों को किसानों से निर्धारित दर से अधिक लगान नहीं वसुलने की आज्ञा दी गई। शेरशाह के पहले किसानों से वसुली गई लगान को वे राजा के पास नहीं भेजते थे। भूराजस्व निर्धारण के लिए एक तरीका अपनाया गया जिसके तहत उपज की अलग—अलग किस्मों पर राज्य को मिलने वाले लगान की दर अलग—अलग तय की गई। राजस्व की दर उपज का एक तिहाई थी। बुआई का क्षेत्रफल फसल की किस्म और किसान द्वारा देय कर एक पट्टे पर लिख लिया जाता था। सूखा या अकाल के समय लगान माफ था, संकट के समय कुएँ खुदवाने के लिए किसानों को धन उधार दिया गया तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए नहरों का निर्माण भी करवाया गया।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

शेरशाह ने व्यापार के विकास पर भी पूरा ध्यान दिया। व्यापारियों से अच्छा व्यवहार करने का सख्त आदेश उसने अपने अधिकारियों को दिया था। व्यापारियों से पूरे राज्य में मात्र दो ही जगह कर लिया जाता था। चूँकि शेरशाह को अपने नये राज्य को मजबूत करने के लिए पैसों की जरूरत थी। व्यापार से आय हो सकता था इसलिए उसने व्यापार की उन्नति पर पूरा ध्यान दिया।

शेरशाह ने व्यापार के विकास के लिए ही यातायात के साधनों को उन्नत बनाया। पुरानी सड़कों की मरम्मत करवाई एवं कुछ नई सड़कों का निर्माण भी। सड़कों के किनारे प्रत्येक आठ किलोमीटर पर लोगों और व्यापारियों के विश्राम के लिए सरायों का निर्माण करवाया जहाँ हिन्दू और मुस्लमान दोनों कर्मचारी रहते थे। व्यापार का विकास हो सके इसके लिए व्यापारियों से लिये जाने वाले कर को फिर से तय किया गया। सरायों के आसपास गाँवों या छोटे शहरों को बसाया गया। आज भी आपको कई गाँवों एवं शहरों के नाम में सराय मिल जाएगा जैसे–मुगलसराय, दलसिंहसराय, बेगुसराय इत्यादि।

दैनिक प्रशासन की व्यवस्था में शेरशाह ने सल्तनत काल में प्रचलित व्यवस्था को ही बनाए रखा। इसके विषय में आप अध्याय तीन में पढ़े होंगे। शेरशाह ने केवल उसे प्रभावी बनाया। इस प्रकार यह कहना सही होगा कि शेरशाह का शासन काल मात्र 5 वर्षों का रहा। उसके मरने के बाद ही उसका राज्य भी ज्यादा दिन तक नहीं चल सका। उसके उत्तराधिकारी शेरशाह की व्यवस्था को संभाल नहीं सके। फिर भी कम समय में ही उसने जो कार्य किए तथा जनता पर जितना प्रभाव इन कार्यों का हुआ वह इतिहास में शेरशाह और उसके अफगान राज्य को महत्वपूर्ण स्थान दिलाता है। स्मरणीय है कि इस पूरी प्रक्रिया में बिहार की भूमिका निर्णायक थी। क्योंकि शेरशाह की प्रशासनिक सुधारों की प्रयोगशाला बिहार ही था।

अकबर

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

**बादशाह अकबर और मुगल राज्य का मजबूत होना**–शेरशाह के उत्तराधिकारियों के कमजोर होने के कारण हुमायूँ दिल्ली पर **1555 ई0 में** अधिकार करने में एक बार फिर सफल रहा । परन्तु वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सका। उसका बेटा

अकबर 13 साल की उम्र में बादशाह बना (1556 ई0) उस समय हिन्दुस्तान में मुगल वंश का राज्य ठीक से जम नहीं पाया था। चारों तरफ से दूसरे राजा मुगलों को खदेड़ने पर तुले थे। अकबर की छोटी उम्र को देखते हुए मुगलों के प्रमुख अधिकारी बैरम खान ने शासन का काम चलाया और अकबर को राजकाज की शिक्षा दी। उसने पहले अपने राज्य को बढ़ाने एवं फिर उसे मजबूत करने का काम शुरू किया। अकबर ने मुगल रज्य को बढ़ाने के लिए कई राज्यों को सैनिक अभियान द्वारा अधिकार में किया। राज्य का आरंभिक विस्तार 1556 से 1576 के बीच हुआ। उन दिनों आज के मध्य प्रदेश के इलाके में दो महत्वपूर्ण राज्य थे। एक राज था मालवा, जहाँ का राजा बाज बहादुर था जिसकी राजधानी माण्डू थी। दूसरा प्रमुख राज्य गढ़ कटंगा 'गोंडवाना' था। 1561 एवं 1562 ई0 में इन दोनों राज्यों पर मुगलों ने अधिकार कर लिया। विजय के बाद मुगल सेनाओं और सेनापति अधम खाँ को बहुत धन प्राप्त हुआ जिसे उसने अकबर के पास नही पहुँचाया। इसका पता चलने पर बादशाह ने कड़ाई से उस धन को प्राप्त किया।

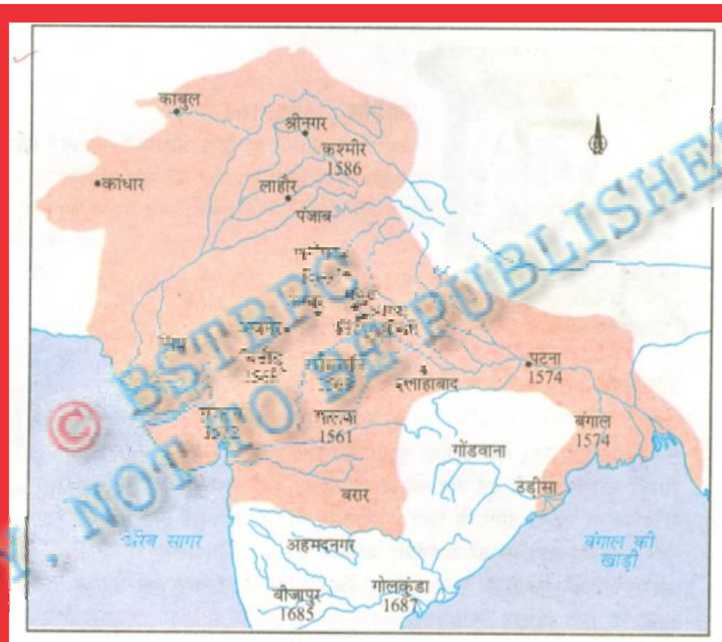


अकबर के अधीन मुगल साम्राज्य

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इसके अगले दस वर्षों तक अकबर ने राजपूताना के अधिकांश भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तथा गुजरात और बंगाल को भी जीत लिया। राजपूत राज्यों में एक महत्वपूर्ण अभियान चित्तौड़ का था। वहाँ महाराणा प्रताप का राज था। उसने अकबर की अधीनता मानने से इन्कार किया और जीवन भर विरोध करता रहा।

यद्यपि उसका दुर्गम किला अकबर द्वारा जीत लिया गया था। चित्तौड़ के बाद दूसरा महत्वपूर्ण राज्य रणथम्भौर को अकबर के द्वारा जीता गया। इन विजयों के बाद अधिकांश राजपूत राज्यों–जैसलमेर, बीकानेर आदि ने अकबर के समक्ष समर्पण कर दिया। इसके बाद अकबर ने गुजरात को अपने अधिकार में किया। यह प्रदेश बाहरी देशों से व्यापार के कारण काफी समृद्ध बन गया था। यह भारत के साथ होनेवाले विदेश व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र था। मुगलों के नियंत्रण के पश्चात इससे अच्छी आय प्राप्त हो सकती थी। यहाँ की भूमि भी काफी उपजाऊ थी एवं शिल्पकला काफी उन्नत अवस्था में थी। इसलिए अकबर ने इस क्षेत्र को जीतना जरूरी समझा। इसी विजय की याद में अकबर ने बुलंद दरवाजा का निर्माण करवाया। इसके विषय में आप इकाई पाँच में पढ़ेंगे। अकबर का ध्यान भारत के एक अन्य उर्वर क्षेत्र बंगाल पर गया। वहाँ अभी भी अफगानों का राज था। उसके पड़ोसी बिहार पर भी अफगान शासन ही था। 1576 ई0 में एक भीषण युद्ध के बाद अकबर ने इन दोनों प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। यह अफगानों का आखरी राज्य था जिसपर मुगलों का अधिकार हुआ। इन विजयों के पश्चात अकबर ने पश्चिमोत्तर सीमांत को सुरक्षित बनाने पर बल दिया। उसने काबुल और कंधार पर विजय प्राप्त की और अफगान कबायलियों के विद्रोह का दमन किया तदोपरांत दक्षिणी भारत के पठारी क्षेत्रों के राज्यों पर अभियान किया फलस्वरूप खानदेश पूर्णतः और अहमदनगर आंशिक रूप से उसके शासन के अधीन आ गया। 1602 में राजकुमार सलीम के विद्रोह के कारण अकबर को दक्कन का अभियान स्थगित करना पड़ा। 1605 ई0 में उसकी मृत्यु हो गई।

**मुगल राज्य के अमीर–** अकबर जब बादशाह बना तो 51 बड़े अधिकारी या दरबारी थे जो अमीर कहलाते थे। इन्हीं लोगों के जिम्मे मुगल सम्राज्य का काम–काज था। इन अमीरों में अधिकांश तूरानी थे जो बाबर के साथ तुर्किस्तान से आए थे। इनमें कई बादशाह अकबर के रिशतेदार भी थे। इनका पूरा समर्थन बादशाह को नही मिल रहा था। वे अपने को बादशाह के बराबर समझते थे। उनके पास अच्छी जागीर थी जिसका उपयोग वे स्वतंत्र तरीके से करते रहना चाहते थे। वे यह भी चाहते थे कि बादशाह सभी मामलों में उनकी बात माने। अकबर को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं

> क्या आप सल्तनत कालीन अमीर एवं मुगलकाल के अमीर वर्ग में कोई अंतर देखते हैं?



WBCOPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

थी। वह चाहता था कि उसका आदेश सभी लोग माने। अकबर इस स्थिति से निपटने के लिए स्थाई उपाय किया। उसके दरबार में ईरानी अमीर भी थे जो हुमायूँ के साथ भारत आए थे। उसने इन ईरानी अमीरों को बढ़ावा और समर्थन दिया। उससे खुश होकर इन लोगों ने अकबर को पूरा सहयोग दिया। इनका साथ लेकर अकबर ने तुरानी अमीरों को नियंत्रित किया।

**हिन्दुस्तानी मुसलमानों को अमीर बनाने की कोशिश**– आगे ऐसी कोई समस्या खड़ी न हो इसलिए अकबर ने कुछ और उपाय किये। उसने हिन्दुस्तानी मुसलमानों को भी अमीर बनाने की कोशिश की। वह जानता था कि राज्य मजबूत बनाने के लिए हिन्दुस्तान के शक्तिशाली और मजबूत लोगों का समर्थन लेना जरूरी होगा। ऐसे दो सामाजिक वर्ग थे। एक राजपूत और दूसरे जमीन और सम्पत्ति वाले मुसलमान परिवार जो कई सदियों से भारत में रह रहे थे। दूसरी बात यह कि बादशाह यह भी सोच रहा था कि अगर वह किसी नए समूह को प्रशासन में शामिल करेगा तो वह समूह हमेशा बादशाह का समर्थन करेगा। इस सोच के साथ उसने भारतीय मुसलमानों को दरबार में ऊँचा स्थान दिया। इस नए वर्ग को वह अपने समर्थन से धीरे–धीरे मजबूत बनाता गया। इसका असर यह हुआ कि ईरानी और तूरानी अमीर दोनों नियंत्रित रहे।

**राजपूतों को अमीर बनाने की कोशिश**–भारत के इस शक्तिशाली सामाजिक–राजनैतिक वर्ग का समर्थन मुगल शासन को मजबूत बनाने के लिए जरूरी था। अकबर ने यही सोचकर इससे दोस्ती का प्रयास आरंभ किया। राजपूत अपने को स्वतंत्र रखना चाहते थे। उसने राजपूतों को सैनिक विजय और विवाह संबंध की नीतियों को अपनाकर अपने अधीन किया। अकबर ने राजपूत राजाओं के सामने यह बात रखी कि अगर वे उसके अधीन हो जाते हैं तो वह उनके राज्य में उन्हें राज करने देगा और मुगल सम्राज्य में उन्हें अमीर बनाया जाएगा। दूसरे क्षेत्रों में उन्हें जागीर भी दी जाएगी। कुछ राजपूत राज्य इस प्रस्ताव को मानकर मुगल अमीर बन गए। इस तरह अकबर राजपूतों को अपना समर्थक बनाया। उनकी धार्मिक भावनाओं का सम्मान करने के लिए तथा बहुसंख्य हिन्दुओं का समर्थन प्राप्त करने हेतु 1562 ई0 में तीर्थयात्रा कर बंद कर दिया। 1564 में जजिया कर लेना बंद हुआ।

**मुगल प्रशासन एवं मनसबदार**– मुगल सम्राज्य एवं प्रशासन की नींव अकबर ने सुदृढ़ की। उसी के पास समय और शक्ति दोनों थी जिसके कारण वह ऐसा कर

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सका। राज्य में मौजूद गाँवों और शहरों का प्रशासन पहले जैसा ही रहा। अकबर ने किस तरह की प्रशासनिक व्यवस्था अपने राज्य में लागू किया इसकी जानकारी उसके दरबार में रहने वाले ''अबुल फजल'' की रचना 'अकबरनामा' और 'आइन–ए–अकबरी' से मिलती है। अबुल फजल के अनुसार साम्राज्य कई प्रान्तों में बँटा था जिन्हें ''सूबा'' (प्रान्त) कहा जाता था। इसका प्रमुख 'सूबेदार' कहलाता था. जो राजनैतिक तथा सैनिक दोनों कार्य करता था। अकबर का साम्राज्य पन्द्रह सूबों में बँटा था। सूबा 'सरकार' में विभक्त था जो आज के जिलों से कई गुणा बड़ा होता था। सरकार (जिला) आज की तरह कई परगनों (प्रखण्डों) में बँटा था। यह भी आज के प्रखण्ड से काफी बड़ा होता था।

**मुगल मनसबदार**– मुगल सम्राट कई अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रशासन का काम देखने के लिए नियुक्त करता था। इन्ही अधिकारियों को 'मनसबदार' कहा जाता था। पूरे मुगल साम्राज्य में हजारों छोटे बड़े 'मनसबदार' थे। मनसबदार साम्राज्य में बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। वे बादशाह के लिए सैनिक जिम्मेदारियों को भी निभाते थे। प्रत्येक मनसबदार को उनके जात के अनुसार पदक्रम एवं वरीयता प्राप्त थी जबकि सवार के अनुसार एक निश्चित संख्या में सेना और उससे जुड़े साजो–सामान को रखना पड़ता था। इसे बॉक्स में समझाया गया है। राज्य में शांति बनाए रखने का काम भी मनसबदार करते थे। राज्य विस्तार करने के लिए बादशाह द्वारा लड़ी गई लड़ाई में ये लोग उसी सेना से सहयोग करते थे। मनसबदारों की कई श्रेणियाँ होती थीं अर्थात् पद के आधार पर उनमें भी कुछ बड़े कुछ मध्यम दर्जे का तो कुछ छोटे होते थे. जैसे आज के अधिकारियों में भी इस तरह का विभाजन होता है। बड़े मनसबदारों को जिनकी संख्या बहुत कम थी को 'अमीर' कहा जाता था। 'अमीरों' को जितना वेतन मिलता था, उतना दुनिया के किसी अन्य राज्य के अधिकारियों को नही मिलता था। 8000 रुपया महीना

> मुगल मनसबदार जिनका 5000 जात का मनसब होता था उसे 30,000 प्रति माह वेतन मिलता था। उन्हें 340 घोड़े ,100 हाथी, 800 ऊँट, 100 खच्चर तथा 160 गाड़ीयाँ रखनी होती थीं इसके अलावा घुड़सवार एवं पैदल सैनिक भी रखने पड़ते थे। यह उदाहरण मनसबदारों के सैनिक दायित्व को बताता है।

© BSEB WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

से 45000 रुपया महीना तक वेतन प्राप्त करने वाला, अमीर होता था। निम्न स्तर के मनसबदारों के नकद वेतन मिलता था मगर उच्च स्तर के मनसबदारों को जागीरें प्रदान की जाती थीं यह जागीरदार भी कहलाते थे। जागीर के अंतर्गत इन्हें निर्धारित लगान वाली भूमि आवंटित की जाती थी जिसकी लगान ये प्राप्त कर अपना खर्च पूरा करते थे।

### अकबरनामा और आइन–ए–अकबरी

**अकबर ने अपने मित्र और सलाहकार अबुल फजल को अपने शासन काल का इतिहास लिखने का आदेश दिया। अबुल फजल ने तीन भागों में यह रचना लिखी जिसका नाम 'अकबरनामा' था प्रथम भाग अकबर के पूर्वजों का बयान है। दूसरे में अकबर के शासन काल का इतिहास है जिसका नाम 'आइन–ए–अकबरी' है, इसमें प्रशासन, सेना, राजस्व, साम्राज्य का भूगोल समकालीन भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का वर्णन है।**

vHkh d: vf/kdkjh vkj exydलीन eu lcnार में क्या dkई समानता gS A

मनसबदारों का प्रशासन में क्या स्थान है इसको बताने के लिए 'जात' और 'सवार' नामक दो संख्यासूचक शब्द अपनाए गए। इसमें जात की संख्या जितनी अधिक होती वह उतना ही बड़ा अधिकारी माना जाता था। उसी के अधार पर उन्हें वेतन दिया जाता था। इसी तरह 'सवार' की भी संख्या निश्चित होती थी जिसके अंतर्गत किसी मनसबदार को कितना पैदल सैनिक, कितने घोड़े और सवार तथा कितना हाथी रखना है, यह तय किया जाता था। मनसबदारों को वेतन के रूप में भूमि दिया जाता था जिससे वे राजस्व एकत्रित करते थे। मनसबदारों को दी गई भूमि जागीर कहलाती थी. इसमें जमीन से प्राप्त आमदनी का आकलन ठीक से किया जाता ताकि मनसबदारों के लिए निर्धारित वेतन उससे प्राप्त हो जाए। इस तरह मनसबदार जागीरदार भी बन जाते थे। इनका पद वंशानुगत नही था। मनसबदारों की नियुक्ति राजा के द्वारा की जाती थी। इसमें प्रान्त प्रमुख (सूबेदार) और बड़े मनसबदारों की

NCERT
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सिफारिश भी चलती थी। ज्यादातर मनसबदार अपने जीवन काल में यह प्रयास करते थे कि किसी तरह वे अपने लड़के को भी मनसबदार बना दे। इसके लिए प्रभावशाली लोगों को कीमती उपहार भी उनके द्वारा दिए जाते थे।

**राज्य की आमदनी, खेती बाड़ी और किसान&** राज्य की आमदनी मुख्य रूप से खेती की उपज पर जो कर लिया जाता था उससे होती थी। खेती का काम छोटे किसानों द्वारा किया जाता था। किसानों से कर गाँवों में रहने वाले ग्राम प्रमुख या स्थानीय सरदारों द्वारा लिया जाता था। किसानों से उपज के उपर कितना कर लिया जाय इसे अकबर के राजस्व मंत्री राजा टोडरमल ने तय कर दिया था। उसने खेती लायक भूमि का सर्वेक्षण किया और उसी के आधार पर नकद रूप में कर तय किया गया था। यह मोटा–मोटी उपज का तीन से छः भाग तक होता था। जमीन को चार भागों में बाँटा गया। सबसे अच्छा पोलज–जिसपर हर साल खेती होती थी। परती जिसमें एक साल के अंतर पर खेती होती थी। चाचर जिसमें कुछ अंतराल पर बुआई होती थी, और बंजर–लम्बे समय तक बिना बुआई वाला जमीन। लगान भी इन पर अलग–अलग था। राज्य खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को ऋृण सहायता देता तथा सिंचाई के साधनों को निर्मित कराता था। किसान मुख्यतः चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, और कुछ सब्जियाँ उपजाते थे। जैसे– जैसे साम्राज्य का विस्तार हुआ उसका खर्च भी बढ़ता गया उसे पूरा करने के लिए किसानों के उपर लगान का बोझ बढ़ाया गया। इस कारण से किसानों के हालात और खराब हुए। उनके पास लगान देकर बहुत कुछ बचता नहीं था, जिसे वे अगले साल तक बचा कर रख सकें।

**आम लोगों का जीवन–** मुगल काल में जन साधारण के जीवन के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। इस काल में यूरोपीय व्यापारी भारत आते थे उनमें से कई लोगों ने भारत की संपत्ति और समृद्धि तथा शासक वर्ग के शानो–शौकत के जीवन के साथ–साथ जन–साधारण जैसे किसानों के जीवन से जुड़ी वस्तुओं को बनाने वाले, दस्तकार और मजदूरों की गरीबी से भरे जीवन का भी चित्रण किया है। सामान्य आदमी कितना कम कपड़ा पहनते थे इस बात का जिक्र बाबर ने भी अपनी आत्मकथा 'तुजुके–ए–बाबरी' में किया है। उसने कहा कि ''यहँ किसान तथा निम्नवर्ग के लोग करीब–करीब नंगे रहते हैं'' इसके बाद वह उस लंगोट का वर्णन करता है जो पुरुष

पहनते थे तथा महिलाओं की साड़ियों का भी वर्णन करता है। लोगों के द्वारा जूतों का कम प्रयोग किया जाता था। जहाँ तक मकान और उसमें मौजूद समानों की बात करें तो घर मिट्टी का बना था जो 'फुँस' से ढंका जाता था। उसमें सामान्यतः एक कमरा और एक ही बरामदा होता था। मिट्टी के ही बने कुछ बर्तन होते थे। एक चारपाई और बाँस की बनी चटाई रहती थी, ताँबे तथा अन्य धातुओं के बर्तन इनकी पहुँच से दूर था। खाद्य पदार्थों में चावल बाजरा और दाल प्रमुख था। बंगाल और समुद्र के तटीय इलाकों में मछली प्रमुख खाद्य पदार्थ था। उत्तर भारत में गेहूँ और मोटे अनाज की रोटी तथा दाल प्रमुख भोजन था। लोगों के द्वारा भर पेट भोजन रात में ही खाया जाता। खाद्यानों की अपेक्षा तेल, घी सस्ते थे इसलिए लोगों का वह प्रमुख भोजन था। चीनी तथा नमक थोड़े महंगे, होते थे। इस प्रकार यद्यपि आम आदमी के पास कपड़ों की कमी थी लेकिन खाना अच्छा खाते थे। गाय और भैंस लोग अधिक संख्या में रखते इसलिए दूध–घी उन्हें काफी मिलता था। लोगों के ज़ीवन का आधार खेती था और वह वर्षा के उपर निर्भर करता था। प्रति वर्ष खेती होता था तो किसानों को खाने के लिए मिलता नहीं तो अकाल की स्थिति में पिछला साल का कुछ भी बचा नही रहता जो वे खा सकते थे। लगान जब नकद में देना तय हुआ तो किसानों की स्थिति और खराब होने लगी। लगान देने के दबाव में मंडी में उनका अनाज सस्ता बिक जाता था। कुल मिलाकर गाँवों में रहने वाले बहुसंख्या लोगों का जीवन बहुत गरीबी में बीतता था।

**मुगलों की धार्मिक नीति और भारतीय लोगों के साथ उनका मिलन–** अकबर ने भारत में अपने शासन को मजबूत बनाने के लिए बहुसंख्यक भारतीय हिन्दु लोगों के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाने के लिए धार्मिक स्तर पर मेल–जोल की नीति अपनायी। अकबर ने अपने राज्य को स्थायी बनाने के लिए भारतीय लोगों की बहुसंख्यक आबादी यानी हिन्दुओं का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। इसी के तहत अकबर ने एक नवीन धार्मिक नीति सुलह–ए–कुल (सर्वत्र–शांति) को अपनाया। यह नीति, सच्चाई, न्याय और शांति पर बल देता था।

**सूलह–ए–कुल–:** vdcj }kjk Hkkjr e viukbZ xbZ /kkfeZd uhfr ftles lHkh /keksZ ds ekuus okyks ds lkFk lfg".kqrk dk O;ogkj fd;k x;kA /kkfeZd vkLFkk ds Lrj ij vUrj ugh fd;k x;kA

अबुल फजल ने सुलह–ए–कुल के विचार और नीति को अपनाने में अकबर की मदद की। जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी इस नीति को अपनाया। औरंगजेब के काल में धार्मिक स्तर पर मेल–जोल बनाए रखने की नीति राजनैतिक स्थिति के कारण खंडित हुआ। अकबर ने समाज में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के रखने के लिए एक नई नीति अपनाई जिसे हम 'दिन–ए–एलाही' के नाम से जानते हैं। सभी धर्मों के सार को लेकर उसने इस नई नीति का प्रतिपादन किया।

जहाँगीर

**जहाँगीर और शाहजहाँ के समय मुगल साम्राज्य–** 1605 में अकबर के मरने के बाद उसका पुत्र जहाँगीर बादशाह बना। उसका शासनकाल सामान्यतः शांतिपूर्ण रहा। इस समय अधिक युद्ध नहीं हुआ, फिर भी उसने अपने पिता द्वारा जीते गए क्षेत्र पर नियंत्रण और प्रशासनिक व्यवस्था को बनाए रखा। बंगाल पर मुगल सत्ता को इसने और मजबूत किया। मेवाड़ के राणा के साथ स्थाई शांति स्थापित की। पंजाब के कांगड़ा, क्षेत्र पर अधिकार किया तथा अहमदनगर राज्य के साथ शांति समझौता किया। जहाँगीर के लिए सबसे दुखद रहा कंधार का मुगलों के हाथ से निकल जाना वह अपनी न्याय की जंजीर के लिए जाना जाता था। इसके तहत उसने सोने की एक लम्बी जंजीर बनवाई जिससे घंटियाँ बंधी थीं।

शाहजहाँ

यह राजमहल की दीवार से लटका दिया गया था। उसने यह घोषणा करवाई की किसी के साथ सरकार अथवा अधिकारी

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED © RSTBPC

अन्यायपूर्ण व्यवहार करती तो वह इस जंजीर को खींच कर अपनी फरियाद सून सकता है। इसका आम आदमी पर कितना असर हुआ यह पता नहीं। राजधानी के लोग इससे जरूर लाभान्वित हुए होंगे।

**शाहजहाँ–** 1628 में पिता जहाँगीर की मृत्यु के बाद शाहजहाँ गद्दी पर बैठा। आम लोगों के बीच वह ताजमहल के निर्माता के रूप में लोकप्रिय है। बुंदेलखंड और दक्षिण भारत के विद्रोहों को उसने दबाया। बीजापुर और गोलकुंड जैसे दक्षिण भारतीय राज्य को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। पश्चिमोत्तर सीमा को सुरक्षित करने के लिए मध्य एशिया के बल्ख और बदख्शाँ पर आक्रमण किया। कंधार को एक बार पुनः अपने अधिकार में किया. लेकिन वह स्थाई नहीं रह सका। असम के कामरूप क्षेत्र पर अधिकार किया। इस प्रकार उसके शासन काल में मुगल साम्राज्य और मजबूत हुआ। मुगल राज्य की सीमाएँ भी इस समय बढ़ीं। राजनीतिक रूप से शाहजहाँ का काल मुख्यतः शांतिपूर्ण रहा। यद्दपि मध्य एशिया के अभियान द्वारा प्राप्त क्षेत्र पर उसका नियंत्रण नहीं रहा।

औरंगजेब

**औरंगजेब का शासन काल –** 1656 में बादशाह शाहजहाँ बुरी तरह बीमार पड़ गया। सबलोग यह मानने लगे कि कुछ दिनों में वह मर जाएगा। शाहजहाँ के चार पुत्र थे–दारा, शुजा, औरंगजेब, और मुराद। चारो बादशाह बनना चाहते थे। शाहजहाँ ने दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। मगर उसके बाकी के तीन लड़कों ने इस बात को नहीं माना।

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सब अपनी–अपनी सेना लेकर–तख्त पर अधिकार के लिए आगरा की ओर चल दिए। भाइयों के बीच कई युद्ध हुए। अंत में औरंगजेब सफल रहा। वह अपने पिता के जीते जी शासक बन गया। शाहजहाँ को उसने 8 वर्षो तक कैद में रखा। इसके कारण उसकी अलोचना होती है।

औरंगजेब ने साम्राज्य को विस्तारित करने की कोशिश की। इसके तहत 1663 ई0 में अहोम राज्य (असम) को अपने अधीन किया। लेकिन यह अस्थाई रहा। दक्षिण भारत के दो महत्वपूर्ण राज्य बीजापुर और गोलकुंडा को 1686–87 ई0 में मुगल राज्य में मिला लिया गया। इस प्रकार औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य अफगानिस्तान से लेकर तमिलनाडु तक फैल गया। राज्य के इस विस्तृत रूप ने कई नई समस्याएँ औरंगजेब के समक्ष खड़ी कर दीं। इनमें एक था वेतन के मद में मिलने वाले जागीरों की कमी। क्योंकि पशासनिक वर्ग का स्वरूप साम्राज्य फैलने के साथ काफी बढ़ गया था और उनके लिए जागीर कम पड़ने लगी। इसने पूरे राज्य को अस्त व्यस्त कर दिया था– इसके परिणाम घातक रहे जो आगे मुगल राज्य के पतन के कारकों में महत्वपूर्ण हो गया।

**मुगल साम्राज्य के पतन के कारण–** अठारहवीं शताब्दी में मुगल सम्राज्य छिन्न–भिन्न होने लगा। पतन के कुछ कारक तो सत्रहवीं सदी में ही प्रस्तुत हो चुके थे, पर वास्तविक कमजोरी 18वीं शताब्दी में दिखाई पड़ी। औरंगजेब की मृत्यु 1707 में हुई। उसके उत्तराधिकारी उस विशाल साम्राज्य को सम्भाल पाने में सक्षम नहीं थे। इसके साथ अन्य समस्याएँ भी थीं एक शासक के मरने के बाद उत्तराधिकार के लिए संघर्ष सामान्यतः होता था। इसमें धन और सैन्य शक्ति नष्ट होती गई। प्रभावशाली पदाधिकारी इस स्थिति में किसी एक राजकुमार के साथ मिलकर अपना स्वार्थ साधना चाहते थे। वस्तुतः मुगलों के परवर्ती शासक महत्वपूर्ण पदाधिकारियों के हाथ के कठपुतली थे। इसने सम्पूर्ण प्रशासन को गुटों में विभक्त कर दिया। शासकों के कमजोर होने पर महत्वपूर्ण प्रांतों के गर्वनर स्वतंत्र शासक के रूप में व्यवहार करने लगे।

पतन का एक मौलिक कारण आर्थिक कठिनाईयाँ थीं। इस समय तक

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(1707 के बाद) न तो पर्याप्त धन बचा था और ना ही जागीर जो अधिकारियों को दी जाती। जमींदार असंतुष्ट थे क्योंकि मनसबदार का उनपर कठोर नियंत्रण था वे समझने लगे कि ये लोग आमदनी का बड़ा भाग स्वयं रख लेते हैं अतः उनका मनसबदारों से संघर्ष हुआ। लगान की दर ऊँची होने के कारण किसान अधिकाधिक गरीब होते गए अतः उन्होंने जमींदारों के साथ विद्रोह किया। चूँकि मुगलों का संघर्ष कई जगहों पर चल रहा था अतः उन्हें धन की जरूरत थी जो प्राप्त नहीं हो पा रहा था। इससे आर्थिक संकट अत्यधिक बढ़ गई।

मुगल प्रशासन भी अक्षम होता जा रहा था मनसबदारी प्रथा में अनेक परिवर्तन हो गए थे उनकी संख्या अकबर के समय से तीन गुणा बढ़ गई। वे लगान वसूली का पूरा हिसाब राजा को नही देते थे सैनिकों की संख्या भी उन्होंने घटा दी। उनका स्थांतरण भी अब नहीं होने लगा इसलिए वे स्थानीय सरदारों के समान व्यवहार करने लगे थे। मनसबदारों की बढ़ती संख्या के कारण उनको वेतन के रूप में मिलने वाली जागीर की कमी हो गई। उनमें जागीर प्राप्त करने की होड़ शुरू हो गई। प्रत्येक अधिकारी इसी प्रयास में लगा रहता था कि अच्छी जमीन उसे मिले। जागीर पर नियंत्रण भी अस्थाई होता था क्योंकि प्रशासक एक दूसरे के विरुद्ध षड़यंत्र कर जागीर की अदला–बदली करवा देते। इस प्रकार जागीर का यह संकट सम्पूर्ण मुगल प्रशासन को छिन्न–भिन्न कर दया।

मुगलों का सैनिक क्षमता और शक्ति भी कमजोर हो गया था। अब उच्च अधिकारियों की संख्या का अनुपात बहुत बढ़ गया था। सेना की निपुणता पहले जैसी नहीं रही। किसी समय मुगलों का तोपखाना विश्व में प्रसिद्ध था लेकिन अन्य सेनाओं की तुलना में अब यह तकनीकी रूप में पिछड़ गया था। बंदूकों और तोपों के उन नवीनतम नमूनों में मुगलो की अब कोई रुचि नहीं रह गई थी जिनका प्रयोग संसार के अन्य देश कर रहे थे। सैनिकों को प्रशिक्षण देने के स्थान पर वे विदेशियों को अपनी तोपें को चलाने के लिए नियुक्त कर संतुष्ट हो जाते। इन्होंने नौसेना के विकास की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया। उनको यूरोपीय देशों के आक्रमण की कोई आशंका नहीं थी। यूरोप में नवीन विज्ञान का विकास हो रहा था। वहाँ के विचारशील व्यक्ति नया ज्ञान प्राप्त करके नवीन अनुसंधान कर रहे थे। मुगल कालीन भारत इन नवीन

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

खोजों की ओर से पूर्णतः उदासीन रहा। अभिजात्य वर्ग के लोग और धनी व्यापारी विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत करने में ही रूचि लेते थे। इस विलासितापूर्ण जीवन से 18वीं शताब्दी में देश का चारित्रिक और सामाजिक पतन हो गया। अभिजात कुल के लोग अपना समय आलस्य और शराब पीने में नष्ट कर देते थे।

मुगल शासकों के समक्ष अपनी ही परेशानी एवं समस्या बहुत अधिक थी तभी उन पर उत्तर–पश्चिम से भी हमले किए जाने लगे। इन आक्रमणों ने मुगलों की शक्ति समाप्त कर दी। पहला आक्रमण सन् 1739 ई0 में ईरान के शासक नादिरशाह ने किया और राजधानी दिल्ली को तहस–नहस कर दिया। मुगल उसके सामने झुक गए। उसने भारत से मनचाहा धन लूटा। समकालीन लेखकों ने लुट का विवरण देते हुये बताया है कि नादिरशाह ने साठ लाख रुपये, हजारों सोने के सिक्के, एक करोड़ रुपये के सोने के बर्तन, पचास करोड़ के हीरे–जवाहरात, जिसमें शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया तख्त–ए–ताऊस ( मयूर सिंहासन ) और कोहिनूर हीरा भी शामिल था, लुटा गया। मयूर सिंहासन बेशकीमती रत्नों से बना था। लुट का यह विवरण भारत की संपन्नता को भी दर्शाता है।

नादिरशाह के बाद अफगान सरदार अहमदशाह अब्दाली ने भी कई आक्रमण किया इसने मुगलों के साथ–साथ प्रमुख भारतीय शक्ति मराठों को भी कमजोर किया। इन आक्रमणों के बाद मुगल साम्राज्य दिल्ली के आसपास तक सीमित रह गया। मुगल साम्राज्य किसी तरह 1857 ई0 तक बना रहा लेकिन इसकी शक्ति नए क्षेत्रीय राज्यों में विभक्त हो गयी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इस तरह मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। राजधानी दिल्ली एक कमजोर नगर रह गया। परन्तु उस संस्कृति और जीवन के उन तरीकों का जो मुगल साम्राज्य के वैभव और विलास के अंग थे, का अंत नहीं हुआ। उसकी वैभवशाली परम्परा उसके अवशेष पर पैदा हुई शक्तियों के पास पहुँच गई, जो अठारहवीं शताब्दी में उदित हुई थी। इस सदी का इतिहास इन्हीं राज्यों या क्षेत्रीय शक्तियों का इतिहास है। इन राज्यों में मुगल वैभव की झलक अब भी देखी जा सकती थी। इन राज्यों के विषय में आप आगे के अध्याय में पढ़ेंगे।

## अभ्यास

### फिर से याद करें–

**1. सही जोड़े बनाएँ:–**

| | |
|---|---|
| (क) मनसब | न्याय की जंजीर |
| (ख) बैरम खाँ | पद |
| (ग) सूबेदार | अकबर |
| (घ) जहाँगीर | चित्तौड़ |
| (ड.) महाराणा प्रताप | गर्वनर |

**2. रिक्त स्थान भरें:–**

(i) पानीपत की प्रथम लड़ाई बाबर और........ .................. के बीच . .... ..........ई0 में हुई।

(ii) यदि जात एक मनसबदार के पद और वेतन का द्योतक था, तो सवार उसके...............................को दिखाता था।

(iii) शेरशाह ने .............................. बड़ी संख्या में निर्माण करवाया।

(iv) अकबर का दरबारी इतिहासकार ............................. था जिसने.......................... नामक पुस्तक लिखी।

(v) ................................... मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

**,आइए विचार करें:–**

i) मनसबदार और जागीरदार में क्या संबंध था ?

ii) पानीपत के मैदान में होने वाली प्रथम लड़ाई का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है ?

iii) मुगल प्रशासन की विशेषताओ को बताओ। उसमें मनसबदारों की क्या भूमिका थी

iv) मुगल साम्राज्य के पतन के क्या कारक रहे ?

v) भू–राजस्व से प्राप्त होने वाली आय मुगल साम्रज्य के स्थायित्व के लिए कहाँ तक जरूरी थी ?

vi) मुगल अपने आप को तैमूर के वंशज क्यों कहते थे ?

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

**आइए करके देखें:–**

I) पता लगाओ मुगलों द्वारा अपनाई गई प्रशासनिक व्यवस्था में कौन आज के भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में दिखाई पड़ता है ?

ii) मुगलों के समय गाँव में रहने वाले लोगों और आज के ग्रामीण लोगों में रहन सहन और खान–पान के स्तर पर आप को क्या समानता दिखती है ?